

० गीतु ०

आयमि श्री कुण्ड धाम में, साई गोवर्धनु घुमन्दो ।

वणनि खे पाए भाकिड़ी, साई ब्रज रजिड़ी चुमन्दो ॥१॥

मुहिबत मतिवालो घमें, साई लोढ़ मंझा लुढ़न्दो ।

कढ़हीं गाए मिठा रागिड़ा, कढ़हिं हले नचन्दो कुढ़न्दो ॥२॥

साई सुहिणे मोर जो, रूपु मनोहरु आ ।

सुखदेवीअ जे सुवन जे, सदा महिर जो छटु झुलन्दो ॥३॥

श्री आत्माराम अलिबेलिड़ो, साई शोभ्या सिन्धु ।

भाग सुहाग अनुराग में, साई दींहो दींहु वधन्दो ॥४॥

दर्द भरीअ दिलिड़ीअ सां, साई दुलह सुखु चाहे ।

जुगल मधुर मेलाप में, सदां गुलनि जियां टिड़न्दो ॥५॥

अदियूं आनन्द कन्द खे, आशीशूं सभेई दियो ।

माणें सुखपति सेजिड़ी, सदा खावंद सां खिलंदो ॥६॥